Volume 2, Issue 5 May 2016 ISSN NO: 2454 - 2326

North Asian International Research Journal Consortium

North Asian International Research Journal Of Multidisciplinary

Chief Editor
Dr. Nisar Hussain Malik

Publisher
Dr. Bilal Ahmad Malik

Associate Editor
Dr.Nagendra Mani Trapathi

Honorary
Dr.Ashak Hussain Malik

IRJIF IMPACT FACTOR: 3.52

NAIRJC JOURNAL PUBLICATION

North Asian
International
Research Journal Consortium

Welcome to NAIRJC

ISSN NO: 2454 - 2326

North Asian International Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi, Urdu all research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in Universities, Research Institutes Government and Industry with research interest in the general subjects

Editorial Board

J.Anil Kumar Head Geography University of Thirvanathpuram	Sanjuket Das Head Economics Samplpur University	Adgaonkar Ganesh Dept. of Commerce, B.S.A.U Aruganbad
Kiran Mishra Dept. of English,Ranchi University, Jharkhand	Somanath Reddy Dept. of Social Work, Gulbarga University.	Rajpal Choudhary Dept. Govt. Engg. College Bikaner Rajasthan
R.D. Sharma Head Commerce & Management Jammu University	R.P. Pandday Head Education Dr. C.V.Raman University	Moinuddin Khan Dept. of Botany SinghaniyaUniversity Rajasthan.
Manish Mishra Dept. of Engg, United College Ald.UPTU Lucknow	K.M Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	Ravi Kumar Pandey Director, H.I.M.T, Allahabad
Tihar Pandit Dept. of Environmental Science, University of Kashmir.	Simnani Dept. of Political Science, Govt. Degree College Pulwama, University of Kashmir.	Ashok D. Wagh Head PG. Dept. of Accountancy, B.N.N.College, Bhiwandi, Thane, Maharashtra.
Neelam Yaday Head Exam. Mat.K..M .Patel College Thakurli (E), Thane, Maharashtra	Nisar Hussain Dept. of Medicine A.I. Medical College (U.P) Kanpur University	M.C.P. Singh Head Information Technology Dr C.V. Rama University
Ashak Husssain Head Pol-Science G.B, PG College Ald. Kanpur University	Khagendra Nath Sethi Head Dept. of History Sambalpur University.	Rama Singh Dept. of Political Science A.K.D College, Ald.University of Allahabad

Address: - Dr. Ashak Hussain Malik House No. 221 Gangoo, Pulwama, Jammu and Kashmir, India - 192301, Cell: 09086405302, 09906662570, Ph. No: 01933-212815,
Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com **Website:** www.nairjc.com

North Asian International Research Journal of Multidisciplinary ISSN: 2454 - 2326 Vol. 2, Issue 5 May 2016

IRJIF IMPACT FACTOR: 3.52

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राष्टवादी चिन्तन

(एक ऐतिहासिक अनुषीलन)

डॉ. सर्वेष सिंह

एम.ए.एम.फिल पी.एचडी.(इतिहास)

म्.उंपसरू ेतअमी729 / हउंपसण्बवउ

सामान्य तौर पर, राष्ट्रवाद वह विचारधारा है जो देष के प्रति भक्ति एवं प्रेम की भावना पर आधारित है। यह भावना जन्म अथवा किसी की इच्छा से जाग्रत होती है। संसार में जितने राष्ट्र हैं उतनी ही राष्ट्रवाद की भावनायें प्रायः देखने को मिलती है। राष्ट्रवाद का वास्तविक आधार लोगों की संस्कृति एवं एकात्मीयता की भावनायें होती है। स्पष्टतः राष्ट्रवाद मनुष्य के दिमाग की उपज है और इसीलिये इसका सीधा सम्बन्ध मानव जीवन एवं उसकी क्रियाओं से है। मानव इतिहास में राष्ट्रवाद एक बल अथवा शक्ति के रूप में विद्यमान रहा है जिसकी उपेक्षा आज कतई नहीं की जा सकती, क्योंकि संसार में अनेक छोट–छोटे, दासता में पलने वाले देष, अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को पहचानने लगे है। आज राष्ट्रीय सम्मान एवं एकता को वहां के लोग सर्वोपरि स्थान देने लगे है। वे उन साम्राज्यवादियों को अब नहीं चाहते जिन्होंने उनका शोषण किया और शताब्दियों से उनके ऊपर शासन कियझं

पष्चिमी देषों में, राष्ट्रवाद की भावना का उदय हिंसात्मक तत्वों को लेकर हुआ। फलस्वरूप उन वर्गो अथवा लोगों का दमन हुआ जो इन तत्वों का साहस–पूर्वक मुकाबला न कर सके। यही कारण है कि सिडने ब्रूक्स नॉर्मन ऐंजिल आदि ने राष्ट्रवाद को मानवता का शत्रु बताया। रॉबर्टसन ने तो यहॉ तक कहा कि राष्ट्रवाद एक अबौद्विक भावना है और मानवता का इसी में भला है कि वह इससे शीध्र ही छुटकारा पाये। इसमें सन्देह नहीं कि इन आलोचकों ने राष्ट्रवाद के भयानक परिणामों का अवलोकन किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि यह मानवता के लिये हानिकारक है। लेकिन इनकी विचारधारा अतिषयवादी है। ये आलोचक भूल

जाते हैं कि राष्ट्रवाद के पीछे मानव तत्व भी हैं जिनकी उपेक्षा करना सम्भव नहीं। यह ठीक है कि राष्ट्रवाद आन्दोलन के कुछ नेताओं ने शान्ति–प्रिय पद्वतियों का प्रयोग नहीं किया। लोगों में राष्ट्रवाद भावनाओं का जागरण अच्छे ढंग से नहीं किया। सामान्य रूप से, भारतीय नेताओं ने शान्तिप्रिय तत्वों को ही बढ़ावा दिया। बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी सरदार बल्लव भाई पटेल तथा डॉ. भीम्बराव अम्बेडकर जैसे नेताओं ने लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत किया, हिंसात्मक तत्वों को लेकर नहीं, बल्कि शान्ति एवं अहिंसा के साथ।

डॉ. भीम्भराव अम्बेडकर के अनुसार, राष्ट्रवाद को किसी भी रूप में परखा जाये और कोई भी इसे त्यागने की इच्छा प्रकट करे, लेकिन एक ऐसा तथ्य बन चुका है कि इसे मानव समाज से पृथक नहीं किया जा सकता। उन्होंने स्वयं कहा राष्ट्रवाद एक ऐसा तथ्य है जिसको न तो भुलाया जा सकता है और न ही अस्वीकार किया जा सकता है। चाहे कोई व्यक्ति राष्ट्रवाद को अबौद्विक भावना कहे या वास्तविक भ्रम, इसमें एक ऐसी शक्ति निहित है, एक ऐसा गत्यात्मक बल है, जिससे अनेक साम्राज्यों को छित्र–भित्र किया जा सकता है। राष्ट्रवाद सही है अथवा मानवता के लिये हानिकारक है, यह केवल जोर देने की भावना बड़े–बड़े युद्वों की और ले जा सकती है, चाहे लोग उसको ह्रदय से न चाहें। राष्ट्रवाद केवल दिखावा मात्र नहीं हैं, बल्कि उसकी शक्ति की प्रभावषीलता सिद्व हो चुकी है। स्पष्टतः डॉ. भीम्भराव अम्बेडकर राष्ट्रवाद अनेक लोगों के लिये जीवन–मरण का प्रष्न बन चुका है।

डॉ. भीम्बराव अम्बेडकर के जीवन का वह यह उद्देष्य था कि स्वतन्त्रता के साथ–साथ इस महान देष की एकता भी सुरक्षित रखी जाये। उन्होंने कहा "मुझे इस देष के भावी सामजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विकास के ढाँचे के प्रति किंचित भी सन्देह नहीं है। मैं जानता हूँ कि आज हम राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विभाजित हैं। हम पृथक–पृथक खेमों में है, और शायद मै भी एक पृथक खेमे में हूँ। इतना सब होते हुए भी, मुझे विष्वास है कि समय और परिस्थितियों के आने पर, संसार में कोई भी इस देष को एक बनने से नहीं रोक सकता और विभित्र जातियाँ एवं धर्म होने पर भी, मुझे यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं है कि एक दिन हम लोग किसी न किसी रूप में संगठित ढंग से रहेंगे। उन्होंने केवल सैद्वांतिक एकता पर ही बल नहीं दिया बल्कि व्यावहारिक एकता के भी पक्षपाती थे। देष में भिन्नता होते हुये भी, उन्होंने राष्ट्रीय एकता की बात पर बल दिया।

डॉ. भीम्भराव अम्बेडकर के ह्रदय में अपने देष के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। अपने देष की भावी प्रगति में उनका पूर्ण विष्वास था। स्वतन्त्र और संगठित भारत के वे पक्के हिमायती थे। उनका यह काल्पनिक विचार नहीं था, बल्कि उन्होंने भारतीय इतिहास का जो अध्ययन किया उसका मुल्यात्मक सारांष था। उन्होंने देखा कि प्राचीन भारत में मौलिक एकता थी, हॉलांकि वह हिन्दू समाज व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे, क्योंकि ''हिन्दू जातिवाद ने उस, स्वतन्त्रता एवं समानता का अन्त कर दिया जिसने वैदिक काल को सुषोभित किया था। स्वतन्त्रता संग्राम के समय, उनका यही मुख्य उद्धेष्य था कि सब लोगों को एकत्रित कैसे रखा जाये। उन्होंने कहा हमारे समक्ष कठिनाई अन्तिम उद्वेष्य के बारे में नहीं है, बल्कि इस बात की है कि विभित्र प्रकार के लोगों को किस प्रकार एक करे समान्य निणर्य लिया जाये ताकि सहयोग एवं सदभावना के साथ उस मार्ग पर चल सकें जो एकता कि और ले जा सकता है।

अपने देष और उसके निवासियों में अटूट विष्वास रखते हुए, डॉ. साहेब ने सदैव विघटनकारी, अन्यायपूर्ण तथा दमनकारी तत्वों की आलोचना की और साहस के साथ सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। एक बार उन्होंने लिखा बहुसंख्यक लोगों का यह महान कार्य होगा यदि वे भारत में रहने वाले सभी वर्गो को एकता के सूत्र में लाने का प्रयास करें। उन लोगों को कुछ रियायतें भी दें जो इस एकता के विरूद्व है। हमें उन नारों तथा आवाजों का अन्त करना चाहिये जिससे लोग भयभीत होते हैं। अपने विरोधियों को हमें साथ लेना चाहिये।

डॉ. अम्बेडकर ने केवल नाममात्र की एकता को नहीं चाहा, बल्कि वह लोगों में आत्मिक एकात के समर्थक थे। इसी बात पर उन्होंने बल दिया कि यदि स्थाई एकता स्थापित करनी है तो यह भाई–चारे की भावना पर आधारित होनी चाहिये, अर्थात् एक पारिवारिक भावना लोंगों में होनी चाहिये। संक्षेप में, यह आध्यात्मिक एकता होनी चाहिये। उन्होंने और स्पष्ट शब्दों में कहा भारत में केवल राजनैतिक एकता को ही आवष्यकता नहीं है, बल्कि ह्रदय और आत्मा के एकत्व की भी आवष्यकता है, अन्य शब्दों में, सामाजिक एकता। राजनैतिक एकता में यदि वास्तविक संगठन का प्रदर्षन नहीं होता तो उसका कोई मूल्य नहीं है। यह उन लोगों की एकता के समान है जो बिना मित्र बने ही एक दूसरे के साथी बन जाते है। व्यक्तिगत रूप से, मैं नहीं मानता कि केबल मौलिक हितों की संतुष्टि से ही स्थाई एकता स्थापित की जा सकती है। उनके विचारों के अनुसार देष मे केबल सामाजिक एवं राजनैतिक एकता के लिये ही स्थान नहीं था, वरन् उनका बल

आध्यत्मिक एकता पर भी था। यही कारण है कि उनके स्वतन्त्रता आन्दोलन का उद्वेष्य सीमित नहीं था। वह बहुत पवित्र एवं विस्तृत था। उन्होंने लोगों में सदैव सामाजिक एकता के भाव को अपने राजनैतिक विचारों में सर्वोपरि स्थान प्रदान किया। यदि सच कहा जाये तो डॉ. साहेब भारतीय जनता की शान्ति प्रियता एवं दृढ़ता, अथाह धैर्य और लगन, सादगी एवं सदभावना के ईमानदार प्रतिनिधि थे।

अन्त में, डॉ. साहेब भारतीय नव–राष्ट्र के निर्माण में जीवन के महान् एवं मौलिक उद्वेष्य को ही सामने रखा। राजनैतिक खिलवाड़ राष्ट्रवाद का सच्चा आधार नहीं हैः सच्चा आधार इस देष की आम जनता है। सामान्य समृद्वि के बिना राष्ट्रवाद एवं प्रजातन्त्र की जड़ें मजबूत नहीं बन सकतीं । लोगों में एकता तथा विचार समन्वयता के द्वारा ही एक निर्भीक राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। भारत के लोगों में राष्ट्रवादी भावनायें होते हुए भी, मानववादी विचार होना आवष्यक है। उनके ह्रदय उदार तथा मन विस्तृत होने चाहिये। साथ–साथ, अपने देष की अच्छी परम्पराओं को भी सुरक्षित रखना चाहिये ताकि देष में सर्वागींण विकास सम्भव हो सके । डॉ. साहेब के राष्ट्रवाद के प्रत्यय का सही सार है जिसका भली–भॉति अध्ययन करने से निष्चय ही बहुत–सी बातों का स्पष्टीकरण हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

मंगल शास्त्री – भारतीय संस्कृति का इतिहास
डॉ. सम्पूर्णानन्द – भारतीय राष्ट्रवाद
भाल चन्द फडके – डॉ. बावा साहेब अम्बेडकर
प्रभाकर दिद्ये – महामानव डॉ. बावा साहेब अम्बेडकर
डा. डी.आर जाटव – डॉ. अम्बेडकर का राजनीतिक दर्षन
रमेश रघुवंषी – डॉ अम्बेडकर के प्रासंगिक विचार
एन के देवराज – द फिलास्की आफ कल्चर
लाला ह्रदयाल – हिन्दूस फार सैलफ कल्चर
वीर आर अम्बेडकर – पाकिस्तान और द पार्टीषियन आफ इण्डिया
ए.आर.देसाई – भारतीय राष्ट्र की सामाजिक प्रष्ट्र भूमि
धनन्जय कीर – डा. अम्बेडकर लाइफ एण्डमिष्न
भगवान दास द्वारा संकलित एवं सम्पादित – दस स्पोक अम्बेडकर बाल्यूम ८